मोटरखाना
डॉक्टर करुणा शंकर दुबे

मोटरखाना

रामसेवक बंगले की रजिस्ट्री करवा करके दो बजे दिन में ही लौट आया था। उसने पहले मोटरखाना का दरवाजा खोला और फिर गैस–सिलिंडर के पास जाकर चावल–दाल आदि के डिब्बों को बाहर निकाला । रजिस्ट्रार आफिस से आते समय चौराहे पर बेकार बैठे चार मजदूरों को भी साथ में लिया था। बगल के साइकिल की दुकान से एक हथौड़ा लाया।

रामसेवक दो दिन पहले बहन के हाथ का ही अन्न खाया था। इस बीच वह केवल चाय ही पीता रहा है पर उसमें एक बीस बरस के युवक के समान तेजी थी। मजदूरों को लेकर वह बंगले के मुख्य दरवाजे पर गया। हथौड़े को ऊपर करके ऐसा मारा कि ताला सहित कुण्डा टूट कर दूर जा गिरा। इतनी तेज आवाज हुई कि पड़ोस के बंगले की मालकिन व उनका कुत्ता एक ही साथ चिल्ला पड़े। वह झटाक से अपना गेट खोल कर बाहर आ गई। रामसेवक को देखीं तो अन्दर चली गईं। रामसेवक उनकी तरफ देखा ही नहीं। मजदूर हतप्रभ ! उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। एक ने ताला सहित कुण्डे को उठाया। रामसेवक ने उससे कहा, इसे एक तरफ कहीं रख दो। बाकी की चिन्ता छोड़ो। तुम सब मेरे साथ अन्दर आ जाओ और काम समझ लो।

अन्दर ले जा कर मजदूरों को कमरों में रखे सामानों को दिखाया। उनसे कहा कि ये सभी सामान सावधानी व सलीके से मोटरखाना में रखना है। कोई टूट फूट नहीं होनी चाहिये। बताओ! कितने पैसे लोगे ? तुम लोगों पर कोई दबाव नहीं है।

एक मजदूर–देखियें बाबूजी! सामान तो बहुत अधिक है और कुछ तो वजनी भी हैं। सबको ठीक से रखना भी है। ऐसे वैसे रखना होता तो कोई बात नहीं। हम तो काम करने आये ही हैं, चार आदमी हैं, आप समझ कर जो भी अपनी खुशी से दे देंगे हम ले लेंगे। दिन तो बीत ही गया है। काम के लिहाज से अगर पूरे दिन की दीहाड़ी मिल जाती तो हमारे भी बाल बच्चे अपना पेट भर लेते।

राम सेवक ने मजदूर के मुंह से जब बाल–बच्चों का नाम सुना तो जल–भुन गया। उसने कहा – देखो भाई, बहुत बात मत बढ़ाओं, काम जल्दी शुरू करो, वैसे ही देर हो गयी है रही पैसे की बात, उसकी चिन्ता मत करो। जब सब लुट रहा है तो जैसे ''छप्पन वैसे ही गप्पन''।

दूसरा मजदूर, बात को संभालते हुए खुशामद करके बोला– साहब आप बंगले वाले बड़े आदमी हैं। आप के सामने हमारी क्या मजाल ? हम मोल–भाव करें। आपके लिए तो पैसा हाथ की मैल है। आप ठहरे शहरी साहब–सूबा और हम दीहाड़ी पर काम करने वाले 'गंवई' मजदूर। राम सेवक उसकी बातों से पिघल गया, उसे अपना अतीत याद आ गया। उसने कहा– देखो भाई, हम भी तुम्हारी तरह ही हैं। हमें भी अपना भाई ही जानो।

मजदूर – नहीं साहब! आप इतने बड़े बंगले के मालिक और कहाँ हम। हमारा तो खाने रहने का कोई ठिकाना ही नहीं है। कहाँ राजा 'भोज' और कहाँ 'गंगू' तेली।

राम सेवक– देखो भाई शायद 'गंगू' तेली का तो कोई अपना रहा होगा, पर राजा–महाराजा कहलाने वालों का कोई अपना नहीं होता। सभी खटमल व जोंक की तरह, खून चूसने वाले उससे लिपटे रहते हैं। जबतक मुंह में खून आता रहा, उससे सटे रहे और जैसे ही, पेट भरा छोड़कर अलग हो गये।

मजदूर–साहब! हम लोग का जाने उल्टी–सीधी। मजदूरी किया, कहीं इधर–उधर से ईंट–रोड़ा रखकर रोटी सेंक ली, नमक–मिर्चा से गुलेट लिया और उबड़–खाबड़ में सड़क के किनारे लुढ़क लिए। अपना जीवन तो ऐसे ही एक–एक दिन कटता रहता है।

दूसरा मजदूर बीच में बोल पड़ा– साहब, काम किधर से शुरू किया जाय ?

राम सेवक– पहले बड़े–बड़े सामान रख लो। उन्हीं के ऊपर क्रम से छोटे–छोटे रखो। पूरे छत तक सामान को लगाना है। मैं तुम लोगों के साथ हूँ।

मजदूर– नहीं साहब! आप केवल देखते रहें। हम लोग सब कर लेंगे। आपको कोई सामान नहीं छूना है। बस केवल हम लोगों को बताते रहें।

मजदूर उठा–उठाकर सामानों को मोटरखानें में रखने लगे। राम सेवक, बंगले से लेकरमोटरखाने तक मजदूरों के साथ दौड़ लगाता, सावधान करता। मजदूरों के मना करने पर भी सामानों को इधर–उधर उठाता–रखता। ऐसा

करते–करते रात के नौ बज गये। सभी थककर चूर हो गये। फ्रीज को जब खोला तो देखा उसमें मिठाई के आठ–दस डिब्बे रखे हुए थे। राम सेवक ने कहा, डिब्बे की मिठाईयाँ तो अभी खालो या जब जाना तो घर लेते जाना यदि कल घर न जाना हो तो लोगों को बांट देना।

अब इनका यहाँ कोई काम नही है। कुछ शर्बत की बोतलें भी थीं, उन्हें भी उनको दे दिया। मजदूरों की पूरी दीहाड़ी दो सौ से अधिक नहीं होती थी। रामसेवक ने उन्हें चार सौ रूपये दिये। आटा–चावल–दाल आदि के डिब्बों को भी उन्हें दे दिया। मजदूर भौचक्के होकर कभी एक दूसरे की ओर और कभी राम सेवक की ओर देखते।

एक मजदूर– सरकार! ये हम क्या करेंगे? कहाँ रखेंगे। यहाँ तो कहीं हमें अपना मुँह छिपाने का भी ठौर–ठिकाना नहीं है।

रामसेवक– ठीक है, आज तुम लोग यहीं (मोटरखाने यानि गैरेज के सामने) बना खा–लो। कल इतवार है, जब घर जाना तो अपने साथ यह सब लेते जाना। तुम लोगों के परिवार में यह सब पहुँच जायेगा तो मुझे संतोष होगा।

रामसेवक की बातों में जो सहजता व अपनापन था, उससे उनकी आपसी दूरी मिट गई।

एक मजदूर– सरकार! जब आप हम लोगों के लिए इतने मेहरबान हैं तो हमारी भी एक विनती है।

रामसेवक– हाँ कहो! क्या कह रहे हो?

मजदूर– हम यहीं खाना बनायेंगे, पर आप भी हमारे साथ ही खाना खायेंगे। आप हमारे साथ शुरु से ही भिड़े लगे रहे हैं, पर एक बूंद पानी भी नहीं पिये ।

राम सेवक को लगा, जैसे कोई अपना ही उसका मनुहार कर रहा है। सभी को सहारा चाहिये। उसी के लिए तो परिवार बसाता है, मित्र बनाता है। प्रकृति सर्वदा सहज ही रहती है।

मनुष्य अपने स्वार्थ में उसमें विष घोलता रहता है। उसी की ज्वाला में जलता भुनता रहता है। कुटिल बुद्धि उसे समझौता करने से रोकती है, पर जब हृदय के किसी कोने में शीतलता की आहट होती है तो सब शान्त हो जाता है, क्योंकि, अन्तर में तो हमेशा उसी की ही प्रतीक्षा रहती है।

मजदूर की ममत्व भरी वाणी ने उसे झकझोर दिया। आज तीसरा दिन है जब उसे अन्न मिलेगा। उसके पेट में भूख की ज्वाला एकाएक उग्र हो गई। आज उसे उसकी पत्नी 'ललिया' की याद आई जब वह तकरार के बाद भी उसे खाना खाने के लिए मनाती। घण्टों वह मुंह फुलाये रहता पर वह मना लेती। इतने दिन की जिन्दगी में बरसों बाद उसे यह लगा जैसे कोई अपना खून, मजदूर के रूप में बोल रहा है। उसकी आँखे भर आईं। कुछ बोल न सका। जेब से एक पचास रूपये का नोट निकाला। सहज होने में कुछ समय लगा। धीरे से मजदूर से कहा,– सब सामान तो है, दुकान से कण्डे और धनिया–मिर्चा–बैगन टमाटर लेते आओ।

मजदूर– बाबू जी! आपने दूनीं मजदूरी के साथ इतना सब दिया है जिसकी हम कल्पना भी नहीं किये थे। अब और न दें। हम मेहनत करके खाने वाले हैं हमें मुफ्तखोर न बनाइए। हराम का खाना तो बड़े लोगों को ही शोभा देता है।

राम सेवक – इस समय अगर मेरी बात नहीं मानोगे तो मुझे कष्ट होगा। मैं सामान्य स्थिति में नहीं हूँ। मैं तो एक जिन्दा लाश हूँ जो तुम लोगों के सामने खड़ा हूँ। मेरे मन की इच्छा है कि, मेरी कमाई का कुछ अंश तुम लोगों के पसीने के रूप में मिट्टी में पर गिरे जिसकी सुगन्ध से वातावरण पवित्र बने।

मजदूर अब कुछ न बोल सके। एक मजदूर पैसे लेकर बाजार गया और सभी सामान लेकर आ गया। मोटरखाने के बाहर कम्बल बिछा दिये गये। रात के ग्यारह बजे तक खा–पीकर सभी निवृत्त हो गये। मजदूर बाहर कम्बल पर लेट गये। राम सेवक अन्दर 'मोटरखाना' में लेटने चला गया। रामसेवक मोटरखाने में रखे पलंग पर लेट गया। पूरी तरह से थका–था ही अंग–अंग दुःख रहा था पर अन्तर की पीड़ा उसकी आँखों को बन्द होने नहीं दे रही थी। कहते हैं, शरीर शारीरिक श्रम करने वाले को नींद अच्छी आती है पर यह सबके लिए सही नहीं है। वास्तव में निश्चिन्त आदमी को ही स्वस्थ नींद आती है। चिन्तामग्न व्यक्ति तो कभी सोता ही नहीं। वह तो ऐसा योगी है जो दिन–रात जागते हुए सपने देखता रहता है।

मोटरखाने के पंखे धीरे–धीरे चल रहे हैं। उन्हें देखते–देखते रामसेवक के सामने अतीत की वह घटना स्मृति पर आ गयी और फिर गंगा की बाढ़ का दृश्य उपस्थित हो गया। वह उसी के विचार–प्रवाह में डूबने–उतराने लगा –

बनारस जिला मुख्यालय से कुछ कोस दूर रामनगर में गंगा किनारे स्थित उसका गांव बाढ़ की चपेट में आ गया है। उसके मड़हें व खपरैल के पीछे व अगल–बगल कुछ दूरी पर पानी बढ़ रहा है। उसके दरवाजे के सामने से गांव में आने जाने की सुविधा है। गांव की फसलें पहले से ही पानी में डूबी हुई हैं। पूरे दिन रुक–रुककर पानी बरसता ही रहा। शाम को बरसात तेज हो गई। जानवरों को एक मड़हें में बांधकर, बगल वाले मड़हें में पुत्र 'जोखू' को लेकर रामसेवक लेट गया। पत्नी 'ललिया' एक साल की पुत्री मुनिया को लेकर अन्दर खपरैल में सोई। धीरे–धीरे पानी के साथ अंधेरा भी बढ़ता गया।

बिजली की चमक में ही क्षण भर के लिए कुछ दिख जाता। गरज के समय 'जोखू' चिंहुक जाता। रामसेवक मड़हे से उठकर बोरे की 'घोंघी' डालकर रात अंधेरे में टटोलते हुए पिछवाड़े जाकर टो–टोकर पानी का जायजा लेता रहा। बिजली की चमक में कभी–कभी दूर तक पानी के फैलाव को देख लेता। पानी तो अभी भी घर से दूर था पर बढ़ाव पर था। रामसेवक यह सोचकर मन को समझा लिया कि पिछले वर्षो की तरह घर जायेगा। तभी बिजली की तेज चमक के साथ कड़क आवाज हुई जोखू चौका और रोया। रामसेवक दौड़कर मड़हें में आया लेट गया। दिन में गांव के बंधे पर मिट्टी डाली गई थी, उसकी थकान से रामसेवक जल्दी ही सो गया। थोड़ी ही देर में खर्राटे लेने लगा।

रिमझिम बारिश हो रही थी। मड़हें में बंधे जानवर एक साथ डकरने लगे। उधर सामने पेड़ पर उल्लू भी जोर–जोर से हल्ला–करने लगे। रामसेवक मड़हें में दबा हुआ, बचाव के लिए चिल्ला रहा है। गांव वाले दौड़े। मड़हें को एक तरफ उठाये तो रामसेवक 'जोखू' को लिए बाहर आया। उसे कोई चोट नहीं आई थी। वह दूसरे मड़हें में बंधे जानवरों को टटोलते हुए देखने लगा। सभी सुरक्षित थे पर खूँटे से बंधे हुए, छटपटा रहे थे उधर पिछवारे की तरफ झबरू (कुत्ता) भूंक रहा था। रामसेवक अनहोनी की आशंका को ताड़ गया। जानवरों की बेचैनी से खूंटे के इधर–उधर घूमना, उल्लुओं का हल्ला करना तथा झबरू के जोर–जोर से भूंकने की बढ़ती आवाज को सुनकर, रामसेवक की किसी अनहोनी की आशंका से हृदय की धड़कन

बढ़ गई। वह जोखू को लिए दरवाजे की ओर बढ़ा, जोर से धक्का देकर उसे पीटने लगा। जोर–जोर से, जोखू की माँ – 'मुनिया' की माँ दरवाजा खोलो। बुलाया पर, कोई उत्तर नहीं मिला। गाँव वाले मड़हें से जानवरों को निकाल रहे थे।

रामसेवक अभी भी बार–बार चिल्लाये जा रहा था। अनहोनी की आशंका से उसका पूरा शरीर थर–थर काँप रहा था। चिल्लाते–चिल्लाते उसका गला बैठ गया। तभी 'झबरू' आया और उसकी धोती को दाँतो से पकड़ कर पीछे की ओर खींचने लगा। रामसेवक अंधेरे में उसी के सहारे पिछवाड़े की ओर गया। जहाँ उसके पैर मिट्टी की ढेर में फंस गये, वह लुढ़कर गिर पड़ा *'जोखू'* झटक कर दूर जा गिरा। तब तक गांव वाले भी आ गये। गांव के प्रधान 'मनीराम' के हाथ में टार्च थी। टार्च के प्रकाश में लोगों ने देखा कि रामसेवक की दो कमरों की खपरैल की दालान ढही पड़ी । एक ने जोखू को उठा लिया रामसेवक 'जोखू' की माँ को पुकारता हुआ किसी तरह खड़ा हुआ। ढही पड़ी दीवार और खपडों को लांघते हुए कमरे के बीच में जाकर बड़े बड़े ढेलों को हटाने लगा। किसी ने 'पेट्रोमेक्स' जलाया तो पूरा प्रकाश हो गया। लोग कुदाल–फावड़े से मिट्टी हटाने लगे। सुबह के चार बजे से करीब रामसेवक की पत्नी 'ललिया' व बेटी 'मुनिया' की लाशें निकल पाई। राम सेवक ने 'मुनिया' को गोद में उठाया और पछाड़ खा कर बेहोश हो कर जमीन पर गिर गया। उसके मुंह पर पानी का छींटा मार कर होश में लाया गया।

रामसेवक का घर उजड़ गया था। पत्नी व बेटी की लाश की तरफ देखते देखते उसकी आँखे पथरा गयी थीं। अब उसकी आँखों के आँसू सूख गये थे। वह अब न किसी की तरफ देखता और न किसी से कोई बात ही करता। जो भी आता उसकी दशा देखकर रो पड़ता। पुलिस आयी, लाशों का पंचनामा कराया। गांव वालों ने रामसेवक से अन्तिम संस्कार कराया। रामसेवक ने एक आज्ञाकारी बच्चे की तरह लोंग जैसा कहते, उस तरह से सब क्रियाकर्म कर दिया।

बाढ़ का कहर दिन प्रतिदिन बढ़ता ही गया। घटना के दस दिन बाद जिले से एस0डी0एम0 व उसके साथ सार्वजनिक निर्माण विभाग के अभियंता जिनका नाम 'रामआसरे सिंह' था, राहत देने के लिये आये। प्रधान, लोगों को लेकर रामसेवक के घर आये। वह अपने पुत्र 'जोखू' को गोद में लिये बैठा था। प्रधान ने रामसेवक से अधिकारियों को परिचय कराया।

उसने बैठे–बैठे हाथ जोड़ लिया। फिर सिर नीचा कर लिया। हादसे के दूसरे दिन ही उसकी छोटी बहन 'रजिया' आ गयी थी। वह भी बगल में बैठी थी, वह उठी और मड़हे में से चारपाई लायी। सभी उस पर बैठ गये। 'रजिया' ने पूरा दास्तान अधिकारियों को सुनायी। अधिकारियों तथा प्रधान ने रामसेवक को बोलने के लिये उकसाया, पर उसका मुंह नहीं खुला।

रामआसरे सिंह ने एस0डी0एम0 व प्रधान से धीरे से कहा, "यदि यह ऐसे ही रहे तो सम्भव है मानसिक रूप से विक्षिप्त हो जाएँ। यहाँ के वातावरण से इन्हें हटाना होगा।"

एस0डी0एम0– पर इतने छोटे बच्चे को लेकर कहाँ जायेंगे। घर गृहस्थी भी तो है। कोई अपना सगा या रिश्तेदार हो तो कुछ दिन सम्भाल सकता है। पता नहीं, कहीं जाने को भी तैयार होंगे या नहीं।

प्रधान से राम आसरे सिंह ने पूछा तो उन्होंने बताया कि ऐसा कोई रिश्तेदार नहीं है। एस0डी0एम0 ने एक कागज पर रामसेवक के अंगूठे का निशान लगवाया, उस पर प्रधान ने भी हस्ताक्षर किया और दो हजार रुपये की नकद धनराशि मुआवजे के रूप में उसे दे दी गई।

राम आसरे सिंह रामसेवक की दीन–दशा को लेकर रात में सो नहीं सके। मुँह अंधेरे ही, जीप लेकर रामसेवक के घर आ गये।जोखू के लिए कुछ खिलौने व कपड़े भी लाये थे वे राम सेवक के सामने आकर खड़े हो गये। वह चारपाई से उठकर हाथ जोड़ा। राम आसरे सिंह ने उसके दोनों हाथों को अपने हाथों में थाम लिया। उनकी आँखों में आँसू आ गये। 'रजिया' पशुओं को चारा डाल रही थी, वह खंचिया का भूसा वहीं छोड़कर आई और इंजीनियर साहब का पैर पकड़कर बीरन हो बीरन करते हुए कारन करके जोर–जोर से रोने लगी। रामसेवक सिसकियाँ लेने लगा। थोड़ी देर में अश्रुधारा बहने लगी। गाँव वाले भी इकट्ठे हो गये। रामसेवक ने इंजीनियर साहब को चारपाई पर बिठाना चाहा पर वह जमीन पर बैठ गये। उसने इंजीनियर साहब का पैर पकड़ कर कहा, साहब आप चारपाई पर बैठें। रजिया को इंजीनियर साहब व गांव वालों ने चुप कराया। मनीराम प्रधान भी आ गये।

इंजीनियर साहब ने प्रधान से कहा, प्रधान जी, अगर आप लोग कहें तो रामसेवक को उसके बच्चों के साथ मैं 'लखनऊ' लेता जाऊँ। वहाँ मेरे माता–पिता , विकासनगर मुहल्ले में रहते हैं। वहीं पर अपना मकान है। मेरी पत्नी तथा एक लड़का जो लगभग 'जोखू' की ही

उम्र का है, पिताजी के साथ है। वहाँ यह कुछ दिन रहेगा तो मन बहल जायेगा। अगर वहाँ इसका मन लग जायेगा तो रहेगा अन्यथा यहाँ चला आवेगा। इसके साथ जो हादसा हुआ है, यहाँ रहकर उससे उबर नहीं पायेगा। मैं तो यही चाहता हूँ, वैसे आप लोग जैसा समझे।

प्रधान व गाँव वाले, एक ही साथ बोले, साहब आप जो कह रहे हैं इस समय यही जरूरी है। रामसेवक के बहते आंसुओं के साथ हादसे का असर फिलहाल कुछ कम हो गया था। उसे राहत महसूस हो रही थी। उसका होश धीरे–धीरे लौट रहा था। उसके आंखों के सामने का अंधेरा छट रहा था। उसमें अब जीने की चाह जागृत होने लगी थी। नये जीवन को शुरू करने की लालसा का संचार उसकी रगों में होने लगा जिससे वैराग्य के क्षण तिरोहित हो गये।

वह जोखू की ओर देखा, जो इंजीनियर साहब द्वारा लाये गये खिलौने से खेल रहा था। रामसेवक ने अपने 'जोखू' में पत्नी 'ललिया' व बेटी 'मुनिया' का भी दर्शन किया। अब उसे अपना पूरा परिवार 'जोख' में मिल गया। उसी समय 'मनीराम', इंजीनियर साहब की ओर हाथ जोड़कर कहा– "साहब जी, मेरा विचार है कि राम सेवक 'जोखू' को लेकर आपके साथ लखनऊ चले जाये। इनके जानवरों को हम बहन 'रजिया' के यहाँ पहुँचा देंगे। रही खेती–बारी की बात, तो अभी तो सैलाब ही है कुछ होना–जाना तो है नहीं। समय आने पर ही सब होगा। हाँ अपना पता हमें दे दें। हम लोग कभी–कभार वहाँ जाकर इन्हें देखकर मन की तसल्ली कर लेंगे।

प्रधान की राय अन्तिम रही। 'रजिया' ने जोखू को इंजीनियर साहब द्वारा लाये नये कपड़े पहना दिये। रामसेवक एकबार सबकों देखा और हाथ जोड़ लिया। जोखू को गोद में उठाया और जीप की पिछली सीट पर जाकर बैठ गया। तभी उसे कुछ ध्यान आया। 'जोख' को गोद में लिये जीप को गोद में लिये जीप से उतर गया। लोग अचम्भित हो गये। लोगों ने सोचा लगता है बना–बनाया खेल चौपट हो गया। वह गिरे हुए मकान के चौकठ पर गया। जोखू का सिर उससे लगाया। अपने सिर पर चौकठ की मिट्टी लगाया। रुआँसा होकर मुँह लटकाये जीप पर आया। सबके जान में जान आई। रजिया ने आकर रामसेवक का पैर छुआ और 'जोखू' का ललाट चूमी फिर इंजीनियर साहब का पैर छूकर जीप के बगल में हाथ

जोड़कर खड़ी हो गई। इंजीनियर साहब ने जीप स्टार्ट की, सबको हाथ जोड़ा, फिर वहाँ से चल दिये।

रामसेवक को ऐसा लग रहा था जैसे वह स्वप्न देख रहा है। उसे पता ही नहीं चला कि ढ़ाई घंटे कैसे बीत गये। जब जीप इंजीनियर साहब के बंगले पर आई और नौकर ने पीछे का फाटक खोल कर उतरने को कहा तो उसे होश आया।

अपना मोटरखाना खुलवाया गया। उसमें सब व्यवस्था पहले से ही कर दी गयी थी। छोटी–मोटी शहरी गृहस्थी के लगभग सारे सामान रखे थे। नौकर, नमकीन और चाय दे गया। बाप–बेटे ने नाश्ता किया। जोखू कौतूहल पूर्वक सब देख रहा है रामसेवक उसकी ओर देखते–देखते अपने अतीत को लेकर डूबने–उतराने लगा। अब उसे पत्नी की याद आयी। बिना पत्नी के गृहस्थी कैसे चलेगी ? इस प्रश्न का उत्तर उसके पास नहीं था। जोखू कैसे रहेगा ?

उसका खाना–पिना, पालन–पोषण, पढ़ाई–लिखाई, अचारी–बीमारी, दवा–दारु, बिना खेत–बारी और आमदनी के, यह सब कैसे चलेगा। इस शहर में कोई तो अपना नहीं है। किससे कहेगा? अब उसे अपने घर–गांव की याद आई। वहाँ तो सब अपना था। अपना घर, पास–पड़ोस, खेत–खलिहान, बाग–बीरो, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, अन–धन। अपनी 'गंगा' मईया। गंगा, मईया की यादों के साथ उसे वितृष्णा हुई। मन कडुआ गया। गंगा मईया ने तो उसका सब उजाड़ दिया। अब वहाँ बचा ही क्या है ? तभी किसी ने उसकी पीठ पर हाथ रखा। वह चौका! देखा तो एक लम्बे–चौड़े डील–डौल के अधेड़ उम्र के पुरूष उसकी ओर मुस्कुराते हुए अपना प्यार उस पर व 'जोखू' पर उड़ेल रहे है। लपककर उनका पाँव छुआ। उन्होंने जोखू के हाथ में बिस्कुट का छोटा पैकेट थमाया। उसके गाल पर थपकियाँ दी। बिना किसी परिचय और बातचीत के सब अपने हो गये।

राम आसरे सिंह(इंजीनियर साहब) ने माता व पिता समर बहादुर सिंह को बनारस से आने के पहले ही फोन से सब बता दिया था। समर बहादुर सिंह भारत सरकार की सेवा से चार वर्ष पूर्व ही सेवा निवृत्त होकर लखनऊ आ गये थे। 'जोखू' के ही उम्र का उनका पोता 'अमन' उर्फ 'गोलू' उनका खिलौना था। अब उनके पास दो खिलौने हो गये।

रामसेवक की सब व्यवस्था करके दूसरे दिन इंजीनियर साहब बनारस लौट गये। रामसेवक की गृहस्थी टीन व प्लास्टिक के डिब्बों में सिमट गई। 'गोलू' व 'जोखू' बंगले से लेकर 'लॉन' व मोटरखाने में धमा–चौकड़ी मचाते रहते। ठाकुर साहब ने रामसेवक को स्टोव जलाना सिखा दिया। धीरे–धीरे वह रोटी बनाना भी सीख गया।

वह खाना बनाने में आलस करता पर ठाकुर साहब उसे उपवास करने नहीं देते। घर का नौकर भी रामसेवक को खाना बनाने में सहायता कर देता। चाय–सब्जी तो उसे मालकिन ही भिजवा देती । रामसेवक अब बंगले की लॉन में भी सिंचाई गुड़ाई व घास आदि निकालने का काम करने लगा। ठाकुर साहब के साथ बाजार का सामान भी लाने लगा। पोते 'अमन' के स्कूल जाने के बाद ठाकुर साहब गैरेज में आ जाते। 'जोखू' से बातें करते या रामसेवक की रसोई में उसकी मदद करते।

अब रामसेवक अपनी गृहस्थी में रम गया। 'मोटरखाना' उसकी जिन्दगी का हिस्सा बन गया। उसे अब गाँव की भी याद नहीं आती। 'जोखू' को लेकर वह प्रसन्न रहने लगा है।

'अमनबाबू' को सजा संवरा देखता तो उसमें 'जोखू' की कल्पना करने लगता। इधर–उधर सजे हुए बंगले को देखता तो उसकी तुलना गांव के कच्चे मकानों से करने लगता। गांव की असुविधा भरी जिन्दगी से उसे नफरत होने लगी। वह नहीं चाहता कि, कभी उसके 'जोखू' को उस नरक में जाना पड़े।

'अमन बाबू' नर्सरी में पढ़ने जाते। अब रामसेवक ही उन्हें लेकर स्कूल छोड़ने जाता। स्कूल ड्रेस में सजे बच्चों में अपने 'जोखू' को देखता। अच्छे खाते–पीते घरों के बच्चों के गोल–मटोल शरीर, आंखों में लगे काजल, शरीर पर चमकते पाउडर, सजे–संवरे बाल और चमकते हुए मनभावन चेहरों को देखता तो देखते ही रह जाता। उन बच्चों से अपने जोखू की तुलना करता तो उसका मुँह लटक जाता। हृदय में विद्रोह की ज्वाला उठती पर क्या करता, वह तो स्वयं में लाचार था। 'अमन' को छोड़ने के बाद भी गेट पर खड़े होकर बच्चों को देखता। वह 'अमन बाबू' के साथ 'जोखू' को भी स्कूल लाने लगा। अपने 'जोखू' से उनकी तुलना करता। सकल–सूरत में उसका 'जोखू' भी उन लड़कों से उसे कम नहीं दिखता। उसके पास स्कूल में भर्ती कराने व वैसे कपड़े पहनाने की शक्ति नहीं थी। वह अपनी तकदीर को कोसता। अब वह हमेशा स्कूल में ही बना रहना चाहता।

दोपहर की छुट्टी के बाद 'अमन' को लेने के लिए ठाकुर साहब आते थे। रामसेवक ने उनसे आग्रह किया कि 'अमन बाबू' को दोपहर में लेने के लिए वही जाया करेगा। ठाकुर साहब मान गये।

रामसेवक अपने जोखू को लेकर छुट्टी से पहले ही स्कूल पहुँच जाता लॉन में जोखू को गोद में लिए बच्चों के गार्जियन उन्हें लेने के लिए स्कूल आते, जो उन्हें देखता। लॉन में पी0टी0 करते बच्चों को लालसा भरी नजरों से देखता। अपने 'जोखू' को लेकर सपनों में खो जाता। कभी जोखू को अध्यापक, कभी ठाकुर साहब, कभी रामआसरे सिंह, कभी घर पर राहत देने आये एस0डी0एम0 कभी स्कूटर, मोटर साइकिल व कार से आये, सबसे सुन्दर शरीर वाले गार्जियन के रूप में देखना। फिर उसके सामने दया पर मिली 'मोटरखाने' की जिन्दगी और फिर खपरैल की दीवार में दबी पत्नी ललिया व बेटी मुनिया की लाशें सामने आ जातीं। आंखों में आंसू आ जाता और सारा दृश्य ओझल हो जाता। स्कूल का घण्टा बजता, 'अमन' आकर 'जोखू' का गाल सहलाने लगता, तब उसे होश आता।

रामसेवक बस्ता कंधे में टांग लेता। दोनों बच्चों की उँगली पकड़कर घर जाता। कभी–कभी 'अमन' कंधे पर बैठने की जिद करता। एक कंधे पर 'अमन' को और दूसरे पर 'जोखू' को बैठाता। दोनों हंसते हुए घर आते।

लखनऊ में आये छः माह हो गये। 'जोखू' गांव की अइली–गइली भूल गया। जब वह 'लखनवी' खड़ी बोलता तो रामसेवक उसका मुँह ताकता। अब भाषा के साथ वह गांव भी भूल गया। रामसेवक इससे बहुत खुश था। एक बार जीप से इंजीनियर साहब के साथ गांव गया पर जोखू को नहीं ले गया। वह नहीं चाहता कि, उसके जोखू पर गांव की छाप पड़े। वह गांव की खेती बारी की व्यवस्था करके दिन–ही दिन में लौट आया।

ठाकुर साहब ने स्लेट–पेंसिल के साथ अक्षर व संख्या ज्ञान के लिए हिन्दी व अंग्रेजी मैं चार पुस्तकें 'जोखू' को बाजार से लाकर दिया। 'जोखू' किताबों में बने चित्रों को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। रामसेवक भी किताबों को पलटने लगा। ठाकुर साहब ने स्लेट पर कुछ आकृति बनाकर 'जोखू' को दिया। उससे कहे कि, वह भी उसी तरह की आकृति बनावे। 'जोखू' की समझ में कुछ नहीं आया। वह स्लेट पर पेंसिल को खींच ही नहीं पाया। 'अमन' ने उसकी उंगली पकड़कर लिखाने का प्रयास किया पर 'जोखू' लिख नहीं सका। रामसेवक 'जोखू' की

तरफ गुस्से से देखता रहा। थोड़ी देर में 'अमन' चला गया तो 'जोखू' पर रामसेवक का एक बहुत ही तेज थप्पड़ पड़ा। वह तिलमिला गया। उसपर पहली बार मार पड़ी थी। कुछ देर बाद वह अहक–अहक कर रोने लगा। अन्दर से ठाकुर साहब दौड़े आये। 'जोखू' को गोद में उठा लिए। उसके आंसू पोंछने लगे। रामसेवक सहमा हुआ खड़ा था। ठाकुर साहब 'जोखू' को गोद में लिए बरामदे में आये। अमन ने जब टॉफी दिया तो वह शान्त हो गया।

शाम को रामसेवक जब ठाकुर साहब का पैर दबा रहा था। इधर–उधर की बातों के बाद रामसेवक को समझाते हुए कहा, जोखू अभी बच्चा है। पढ़ना–लिखना उसके लिए नया काम है। धीरे–धीरे सीख जायेगा। रामसेवक– बाबू जी, स्कूल में इससे छोटे–छोटे बच्चे आते हैं। 'अमन बाबू' भी तो है? असलबात है कि यह, यह पढ़ना ही नहीं चाहता है।

ठाकुर– कोई भी बच्चा पढ़ना नहीं चाहता है।

रामसेवक– मेरे लाड़–प्यार ने इसे बिगाड़ दिया है। बन्दरिया की तरह मैं ही इसे चिपकाये रहता हूँ।

ठाकुर – रामसेवक, कौन अपने बच्चे को प्यार नहीं करता है? सभी को अपने बच्चे प्यारे होते हैं।

रामसेवक– बाबू जी, मेरी तकदीर ही ऐसी है। जैसे मैं गांव का गंवार, वैसे ही मेरा लड़का । पढ़ाई–लिखाई तो शहर वाले ही जानते हैं। साहब लोग इसी से तो शहर में रहते हैं। गांव में कहाँ कोई साहब–सूबा होता है। सभी मजदूर और जाहिल, गंवार लोग ही तो वहाँ हैं, जो शहर में मजदूरी के लिए चौराहों पर झुण्ड के झुण्ड सुबह से ही खड़े हो जाते हैं और मजदूरी की बाट जोहते हैं।

ठाकुर– अब ऐसी बात नहीं है। गांवों में भी लोग पढ़ने–लिखने लगे हैं। जमाना बदल रहा है। हम लोग भी तो गांव के ही है। पढ़ाई किसी की बपौती नहीं है। कोई जाहिल–गंवार नहीं होता। थोड़ा लगाना पड़ता है। 'जोखू' अच्छा बच्चा है, होनहार है। धैर्य से काम लो। भगवान सब ठीक कर देंगे।

ठाकुर साहब के सोने के बाद राम सेवक मोटरखाने मे आया। जोखू सो रहा था। वह जोखू की स्लेट पर ठाकुर साहब द्वारा बनाई गयी लकीरों को कुछ देर तक गौर से देखता

रहा फिर वैसी ही लकीरें फर्श पर बनाने लगा। उन्हें बनाता, मिटाता । ऐसा करते–करते रात कब खत्म हो गई उसे पता ही नहीं चला।

जोखू सुबह उठकर लॉन के नल पर से हाथ–मुंह धोकर अन्दर आया, उसी समय ठाकुर साहब उसके लिए बन्द लेकर आ गये। राम सेवक स्टोव पर कुकर में खिचड़ी चढ़ा रहा था। उन्होंने उससे अन्दर जाकर मालकिन से चाय लेने को कहा वह गैरेज से बाहर चला गया। उन्होंने देखा स्लेट के सामने फर्श पर खड़िया की धूल बिखरी पड़ी है। सफेद धूल के कारण दूर तक फर्श सफेद दीख रही है जोखू के हाथ बन्द पकड़ाते हुए उन्होंने पूछा, क्यो जोखू, स्लेट पर न लिखकर फर्श पर लिख रहे हो ? जोखू– बाबा मैं लिखना नहीं जानता। बाबू ने तो कल इसीलिए मुझे मारा।

ठाकुर साहब– फर्श पर इशारा करते हुए बोले, तो यह सब किसने लिखा है।

जोखू– पता नहीं, 'बाबा'।

रामसेवक– दोनों की बातों के मोटरखाने के बाहर सुन रहा था। चाय हाथ में लिए वह लॉन में ऐसी जगह चला गया जहाँ किसी की नजर न पड़े।

आज रामसेवक सुबह ही सब काम निपटाना चाहता है, अतः जल्दी–जल्दी लॉन का काम निपटाया। बरामदे और सीढ़ी के गमलों में पानी डाला।

दरवाजों और खिड़की को पोंछकर झाड़ू लगा रहा था तभी ठाकुर साहब ने पूछा, रामसेवक क्या बात है? क्या कहीं जल्दी ही जाना है? रोज तो 'गोलू' को स्कूल भेजने के बाद यह सब काम करते थे।

रामसेवक बात को मोड़ते हुए बोला – बाबू जी, आज ऐसे ही मन किया, जब ये काम करना ही है तो क्यों न सबेरे ही कर लिया जाय। धूप में गर्द उड़ती हैं बहूजी को सब खिड़की–दरवाजा अन्दर से बन्द करना पड़ता है। मुझे इस समय कोई और काम है नहीं। अभी 'अमन' बाबू आ जाते हैं। उन्हें स्कूल भेजकर सब काम से फुर्सत मिल जायेगी।

तब तक अमन बाबू आ गये। बाप–बेटे रोज की तरह उनके साथ स्कूल गये। रास्ते में जाते समय रामसेवक के एक हाथ में तो बैग था, दूसरा हाथ हवा में लकीर बनाते हुए इधर–उधर घूम रहा था। उसके होंठ व आंखें भी इधर–उधर लकीर के साथ नाच रही थीं। कई बार रास्ते में लोगों से टकराया भी 'अमन' को स्कूल में छोड़ने के बाद वह अक्सर

रुककर बच्चों को देखता पर आज जोखू को कन्धे पर बैठाया और जल्दी–जल्दी पग बढ़ाता 'मोटरखाने' में आ गया। ठाकुर साहब का इस समय व्यस्त कार्यक्रम रहता। पेपर, कसरत, पूजा, रामायण व गीता का पाठ चलता।

रामसेवक ने 'मोटरखाने' के शटर को ऊपर से नीचे गिरा दिया। नीचे प्रकाश आने के लिए कुछ जगह थी। जोखू का स्लेट आगे रखकर उसपर ठाकुर साहब द्वारा बनाई गई लकीरों की तरह, जोखू की उंगली को पकड़कर फर्श पर बिखरी खड़िया की धूल पर लकीरें बनवाने लगा। आराम कर करके दिन में तीन से चार घण्टें का समय उसने उन लकीरों को बनाने पर दिया। दोपहर में जब 'अमन बाबू' को स्कूल से लाना था, उसके पहले ही जोखू को सुला दिया। शाम को 'अमन' व जोखू ठाकुर साहब के सामने पढ़ने बैठे तो ठाकुर साहब ने देखा कि, 'जोखू' लकीरों को बनाने लगा है। ठाकुर साहब ने उसे गोद में लेकर शाब्बासी दी।

रामसेवक ठाकुर साहब की स्लेट पर चलती उंगलियों को बड़े ध्यान से देखता। उसी तरह से रात में फर्श पर अभ्यास करके, दिन में जोखू से लिखवाता और शाम तक जोखू ठाकुर साहब के सामने स्लेट पर लिख देता। ठाकुर साहब बहुत प्रसन्न होते।

अब जोखू लकीरों से अक्षर और गिनती पर आ गया। रामसेवक ने रात–दिन एक कर दिया। वह किसी समय भी कुछ देर के लिए झपकी ले लेता। विद्यार्थी के लक्षण उसमें आ गये थे। भोजन, निंद्रा, विषय–वासना सबका त्याग कर उसका ध्यान ठाकुर साहब द्वारा लिखे गये अक्षर, गिनती व उनके द्वारा किये गये उच्चारण पर केन्द्रित हो गया था। भोजन में मात्र खिचड़ी रह गई थी, जिसके पकाने में समय का खर्च नहीं के बराबर था।

ठाकुर साहब भी पढ़ाने में ऐसे रम गये कि, अब नियमित अखबार चाटना भूल गये। उनके पास भी अब समय की कमी हो गई। 'अमन' व 'जोखू' की जोड़ी की पढ़ाई में खोये रहते। पहले वही समय बीतता ही नहीं था। अब कब शाम हो गई पता ही नहीं चलता।

पांच महीने में 'अमन' भी पढ़ने में अच्छा हो गया। अब वह अपने क्लास में प्रथम आने लगा। उसकी माँ व दादी इसका श्रेय 'जोखू' व रामसेवक को देतीं। घर में दोनों का मान बढ़ गया। अब उन्हें अन्दर से अच्छा नाश्ता मिलता। घर में कुछ बनता तो उनका भी हिस्सा होता।

जोखू की पढ़ाई को पूरा कराने के चक्कर में रामसेवक को हिन्दी–अंग्रेजी के अक्षर ज्ञान के साथ गिनती – पहाड़े का भी अच्छा अभ्यास हो गया। ठाकुर साहब शब्दों के उच्चारण और स्पेलिंग पर बहुत ध्यान देते। इसके लिए वे स्वयं शब्दकोश का सहारा लेते। रामसेवक एकाग्रता के साथ उनके उच्चारण को सुनता और 'जोखू' को मोटरखाने में ले जाकर अभ्यास कराता।

इसी बीच इंजीनियर साहब आवास विकास परिषद, उत्तर प्रदेश के मुख्यालय, लखनऊ में उच्च पद पर प्रतिनियुक्ति में आ गये।

रविवार की सुबह लॉन में बैठे हुए ठाकुर साहब से इंजीनियर साहब कह रहे हैं, पिताजी, मैं रामसेवक को लेकर असमंजस में हूँ । ऐसे कब तक चलेगा ? यह तो एकदम जाहिल है। अगर कुछ पढ़ा–लिखा होता तो अपने कार्यालय में चपरासी या माली के पद पर रखवा देता। कई पद रिक्त हैं। अध्यक्ष भी अपने हैं, आसानी से काम हो जाता। अब इसका मन भी यहाँ लग गया है और 'अमन' भी 'जोखू' के साथ पढ़–लिख रहा है। अगर यह यहाँ से चला जायेगा तो आप को भी खलेगा, पर क्या किया जाय यह तो ठहरा अंगूठा छाप ? ठाकुर साहब –तुमसे किसने बताया कि राम सेवक जाहिल और अंगूठा छाप है ?

वह तो हिन्दी के साथ अंग्रेजी के शब्दों की भी जानकारी रखता है। गिनती पहाड़ा भी जानता है। अपने 'जोखू' को तो यही पढ़ाता है। मैं तो केवल गाइड़ कर देता हूँ और हाँ, एक बात तो मैं भूल ही रहा था। शाम को जब यह मेरा पैर दबाता है तो अखबार की सुर्खियों की चर्चा बड़ी बारीकी से करता है। कभी–कभी तो बड़े टेढ़े–मेढ़े सवाल पूछता है। मैं तो नहीं मानता की तुम्हारे कहे मुताबिक यह अनपढ़ है।

रामसेवक अन्दर से दोनों लोगों के लिए चाय लाया। ट्रे मेज पर रख ही रहा था, कि इंजीनियर साहब ने तपाक से पूछा। क्यों रे , जब तू पढ़ना लिखना जानता है तो अपने गांव में बाढ़–राहत के कागज पर अंगूठा क्यों लगाया ?

राम सेवक सहमकर हाथ जोड़कर बोला– साहब, उस समय हम कुछ नहीं जानते थे। ठाकुर साहब की ओर देखकर, "सब बाबू जी के चरणनन् की बलिहारी है।"

ठाकुर साहब – राम सेवक, तुमको तो मैंने कभी नहीं पढ़ाया और न तूने कभी अपने पढ़ने की बात नहीं की। मैं उन दोनों के साथ तुझे भी पढ़ा लिखा देता। अरे, तू कहाँ से 'एकलव्य' पैदा हो गया? 'एकलव्य' तो दोणाचार्य के पास पढ़ने गया था पर उन्होंने ही उसे मनाकर दिया था।

रामसेवक – एकलव्य कौन था, और कैसे पढ़ा–लिखा, यह तो मैं नहीं जानता। पर हाँ! जब आप 'अमन बाबू' व 'जोखू' को पढ़ाते हैं तो मैं उसे सुनता रहता हूँ। यह सब तो आपके चरण दबाने का प्रतिफल है।

ठाकुर साहब– लो, तब तो काम बन गया। रामसेवक अब तुम्हारी सरकारी कार्यालय मैं नौकरी पक्की।

यह सुनते ही राम सेवक के सामने, गैरेज यानि मोटरखाना, बंगला, लॉन, 'जोखू', कुर्सी पर बैठे ठाकुर साहब, इंजीनियर साहब घूमने लगे। उसकी आंखें बन्द हो गई। लगा धरती ऊपर उठ रही है। वह वहीं बैठ गया। जब उसे होश आया तो देखा ठाकुर साहब गिलास का पानी हाथ में लिए उसके मुँह पर छींटे मार रहे हैं। घर के सभी लोग उसे घेरकर खड़े हैं।

अब राम सेवक एक विशेष पोशाक पहनकर साइकिल से परिषद के कार्यालय में जाने लगा है। उसकी चाल–ढाल अब गांव की नहीं रही। फाइलों का रख–रखाव करता है। बहुत से चपरासी जो अंग्रेजी नहीं जानते, अंग्रेजी शीर्षक वाली फाइलों को रामसेवक से पढ़वाते हैं।

जनता के लोग अपने प्रार्थना–पत्र पर अधिकारी द्वारा किये गये अंग्रेजी के आदेश को रामसेवक को दिखाते हैं। कार्यालय में रामसेवक का रुतबा है।

जोखू अब 'यादवेन्द्र' नाम से नर्सरी द्वितीय में 'अमन' के साथ पढ़ने जाने लगा है। ठाकुर साहब के कहने पर विकासनगर में ही, एक कार्नर का अधिक जमीन वाला सस्ता प्लाट भी इंजीनियर साहब ने एलाट करा दिया। उसके लिए विभाग से कर्ज भी मिल गया। कुछ दिनों के बाद राम सेवक विकासनगर के पार्क में माली के पद पर अपना स्थानान्तरण करा लिया। स्कीम के सभी माली उसके नीचे कर दिये गये। वह हेड माली बन गया। पूरी तरह वह अब अपने प्लाट की व्यवस्था में लग गया।

'यादवेन्द्र' हाई स्कूल की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। उसके अंक 'अमनबाबू' से अधिक रहे। रामसेवक का मन नौकरी में नहीं लगता। वह इंजीनियर साहब के घर के काम

के बहाने से मोटरखाने पर आता, खाना बनाकर अपने प्लाट पर चला जाता वहाँ फावड़ा लेकर काम करता। बंगले का नक्शा उसने ठाकुर साहब से बनवा लिया था, उसी के अनुसार प्लाट पर नींव आदि का काम करता। ठाकुर साहब के 'लॉन' के काम के लिए एक माली लगा दिया था। सरसरी तौर पर दिखाने के लिए सुबह–शाम जायजा ले लेता। इंजीनियर साहब ने अपनी सेवायें परिषद में स्थायी रूप से स्थानान्तरित करवा ली। अब वे वहाँ मुख्य अभियन्ता हो गये थे। उन पर काम का दबाव इतनी बढ़ गया कि घर की देख–रेख नहीं कर पाते। ठाकुर साहब अब बहुत कमजोर हो गये थे। 'अमन' व 'जोखू' क्लास के बाद कोचिंग या ट्यूशन में जाते। भारत सरकार में ठाकुर साहब के साथी का लड़का मिनीस्टर बन गया था, उसकी सहायता से 'अमन' को एम0बी0बी0एस0 करने के लिए 'सोवियत रूस' भेज दिया गया। राम सेवक प्लाट पर से देर रात में आता तो कुछ देर ठाकुर साहब के पैर दबाने की औपचारिकता पूरी करता। राम सेवक अब 'मोटरखाना' में नहीं रहना चाहता , पर किराया बचाने के चक्कर में छोड़ नहीं पाता। यादवेन्द्र आई0एस0सी0 में प्रांत की मेरिट लिस्ट में आठवें स्थान पर रहा। उसे छात्रवृत्ति मिलने लगी। वह आई0ए0एस0 के कम्पीटिशन में बैठना चाहता था अतः लखनऊ विश्वविद्यालय में बी0ए0 में नाम लिखाया। अब वह विश्वविद्यालय के छात्रावास में रहने लगा। 'मोटरखाने पर केवल राम सेवक से पैसे लेने के लिए ही कभी–कभी आता।

सुबह के तीन बज रहे हैं। राम सेवक की आंखें लटक रहे मोटरखाने की छत से घूमते हुए पंखे पर टिकी हुई है।

उसका मन चकरघिन्नी की तरह नाच रहा है। उसी समय बाहर सोते हुए मजदूरों के बगल में एक दूसरे के ऊपर रखे प्लास्टिक के डिब्बों एवं कनस्तरों को सुअर ने धक्का दिया। सभी भड़–भड़ाकर गिर पड़े। सुअर, आवाज सुनकर भाग गये। रामसेवक ने सभी सामान 'मोटरखाने' के अन्दर रखवाया। मजदूर नित्यकर्म के लिए चले गये। वह 'मोटरखाने' के अन्दर आया तो देखा, बैनामे के बाद बचे हुए कुछ सादे स्टैम्प पेपर और कागज बैग के ऊपर रखे हैं। वह उन्हें उठा लिया। और उसने बेटे को संबोधित करके अन्तर की ज्वाला को शब्द रूप देने लगा। वह, बार–बार यादवेन्द्र के संबोधन के लिए शब्दों को चुनता उसे लिखता और काट देता।

अन्त में उसने लिखा :–

प्रिय यादवेन्द्र(आई0ए0एस0)

तू क्या जाने की तेरे लिए क्या–क्या मनौती, तंत्र–मंत्र, जादू–टोना और टोटका किया गया है। शादी के सात साल बाद तू पैदा हुआ। मेरी मां, तेरी मां 'ललिमा'को क्या–क्या ताने सुनाती। हमारे समाज में महिलाओं को सभी कुछ सहना पड़ता है। मेरी मां तेरे जन्म के पहले ही संसार से चली गयी। मां के कहे अनुसार, तेरी मां ने तुझे एक भिखारिन को दान में दे दिया। फिर तेरे वजन के बराबर (सावां के बाद आना है) देकर खरीदा था। इसी से तुम्हारा नाम 'जोखू'(एक प्रकार हल्का अन्न जो वर्षात् में सावन के महीने तक पक जाता है।) रखा गया। तेरे कान भी छेदे गये। गंगा जी को आर–पार की माला चढ़ाई गई। तेरी बुआ, तेरी सुखद जिन्दगी व लम्बी आयु के लिए सभी मनौतियाँ पूरी कराई।

माँ तो तुझे छोड़कर पहले ही चली गई और अपनी बुआ को तो ,तुमने ही छोड़ दिया। ठाकुर साहब ने तुझे 'जोखू' से 'यादवेन्द्र' बनाया। तूने उनको भी नहीं पूछा। तेरे लिए मैं 'एकलव्य' बना। अगर इस समय तुम मेरे सामने होते तो शायद तुमसे बात ही नहीं कर पाता। शर्म से मेरा सिर तुम्हारे सामने उठता ही नहीं और न मुँह ही खुलता। यह भगवान की कृपा ही है कि, ठाकुर साहब का अभागा 'एकलव्य' इस कागज के टुकड़े पर अपने दुर्भाग्य का रोना रो रहा है, नहीं तो घुट–घुट कर मर जाता या आत्महत्या कर लेता।

मैंने अपने जोखू के लिए, घर परिवार, पड़ोस, गांव, गंगा मईया, रिश्तेदार ओर स्वयं अपने को भी बलिदान कर दिया। देव तुल्य, नर श्रेष्ठ ठाकुर साहब, जिन्होंने मुझे इस संसार में एक इज्जत की जिन्दगी दी, तुझे जोखू से 'यादवेन्द्र' बनाया, से भी मन ही मन कुढ़ने लगा। मैं बिना आधार के ही अपने सुखद भविष्य की कल्पना में खोया रहता, दुःखद अतीत भूल चुका था। ठाकुर साहब की सहज कृपा के कारण मुझे वर्तमान का भान ही नहीं हुआ। मेरा कल्पना लोक तो तू ही था।

मैं चाहता, मेरा 'यादवेन्द्र' 'अमन बाबू' से बड़ा आदमी बने। 'अमन बाबू' को स्कूल छोड़ने के लिए जाता तो मुझे अच्छा नहीं लगता। 'अमन' की जगह मैं तुझे देखना चाहता । भगवान ने मेरा अरमान पूरा किया। तू 'अमन बाबू' से आगे निकला। मैंने ठाकुर साहब की जो

भी सेवा की, उसके पीछे मेरा कुटिल स्वार्थ था। मेरे स्वार्थ रुपी अन्धे धृतराष्ट्र की संतान 'दुर्योधन', मैं तेरे से भीख मांगता हूँ कि, मेरे पोते–पोतियों को अपने जैसा मत बनाना, नहीं तो तुझे भी अपने सर्वनाश पर रोने के लिए आँखों आंसू नहीं रह जायेंगे।

मैं ठाकुर साहब के 'मोटरखाने' में सारी सुविधाओं के साथ, उनकी कृपा से रह रहा था, पर मेरी कुदृष्टि हमेशा उनके बंगले व उनके सुखमय जीवन पर रहती। बंगले के लम्बे–चौड़े हवादार कमरे, उसमें लगे कूलर,एसी,पंखे, सोफा,कुर्सी, पलंग तथा अन्य आधुनिक सुविधायें मेंरे सीने में गड़ी लोहे की कील की भांति सालती रहतीं।

ठाकुर साहब के ड्राइंगरूम में, तुझे नीचे कालीन पर और 'अमनबाबू' को सोफे पर बैठकर पढ़ते देखता तो अन्दर आग सुलगते लगती। मालकिन तुझे ऊपर बैठने को कहतीं पर मैंने ही बैठने से मना कर दिया था। फिर भी मैं अपने भाग्य को कोसता। यद्यपि मालकिन तुझे और 'अमन बाबू' का एक ही तरह की चीजें खाने के लिए बराबर–बराबर देती, जिसे तुझे खिलाना मेरे औकात में नहीं था, फिर भी मुझे अच्छा नहीं लगता। मेरी महत्वाकांक्षा इतनी ऊँचीं हो गई थी कि, तेरे सामने मैं भगवान को भी तुच्छ समझने लगा था। ठाकुर साहब के ही कारण तेरी पढ़ाई की नींव पक्की हुई। पर जानते हो, हाई स्कूल में तेरा नम्बर 'अमन बाबू' से अधिक आया तो मुझे लगा, मेरी जनम–जनम की मुराद पूरी हो गई। मैं तुझे 'मोटरखाने' में नहीं रखना चाहता , पर क्या करता लाचार था। जब रात में तू गहरी नींद सो जाता , मैं धीरे से 'मोटरखाने' से निकलकर प्लॉट पर जाता, नींव खोदता, ईटें भिगोंता, सीमेण्ट की बोरियों को सहेजता, बार–बार उनको गिनता क्योंकि, मुझे किसी पर विश्वास नहीं रह गया था। सड़क व पार्कों से ईटें व मिट्टी उठा–उठा कर प्लॉट पर रख देता। जब बिजली नहीं होती, सड़कों पर अंधेरा रहता, निर्भय होकर अपना कार्य करता।

मैं तुझे ठाकुर साहब से अच्छे बंगले में देखना चाहता ,अतः कोई भी कुकृत्य करने में मुझे कोई संकोच नहीं होता। मैंने कभी भी परिषद के 'पार्कों या 'लॉन' में काम नहीं किया है।

शुरु के एक–दो वर्ष जब इंजीनियर साहब के साथ मुख्यालय पर था, अंधों में काना राजा था। पूरी नौकरी में हराम का कमाया है। ठाकुर साहब के बंगले पर नये–नये मालियों को लगाता। दिन भर उसी बहाने अपने प्लाट पर मजदूरों के साथ खटता। मुझे कभी थकान नहीं लगी।

ठाकुर साहब के छोटे 'मोटरखाने' में अपनी जिन्दगी बीती। मुझे इसका कटु अनुभव हुआ, अतः तुम्हारे बंगले में बड़ा 'मोटरखाना' और उसके साथ शौचालय तथा स्नानघर भी बनवा दिया जिससे ड्राइवर के परिवार को कोई परेशानी न हो।

उसका दरवाजा भी दूसरी ओर सड़क पर खुलता है। तुम्हारा 'चपरासी पिता' नहीं चाहता था कि उसके नाती–पोते किसी निम्न स्तरीय कर्मचारी के बच्चों से घुलें– मिलें। मैंनें तो यहाँ तक सोच रखा था कि, तुम्हारे बच्चे कभी यह न जान सकें कि उसका 'दादा' आफिस का चपरासी था। जरा सोचो ,मेरी सोच तुम जैसों के लिए कितनी मॉडर्न और वैज्ञानिक थी।

गांव में जन्मा, एक 'मोटरखाना' में दूसरों के टुकड़ों पर पला, जब मेरा भोला–भाला 'जोखू' अधिकारी बनते ही अपने 'चपरासी बाप' को, उसकी हैसियत बता दिया, तो आई0ए0एस0जैसे उच्चतम पदस्थ अधिकारी के लड़के, एक 'गंवार' 'चपरासी' को कैसे बर्दाश्त करेंगे।

लखनऊ में रहते हुए, तुझे विश्वविद्यालय के छात्रावास में रखने की मेरी हैसियत नहीं थी, पर इण्टरमीडियट के बाद से ही तुझे वहाँ रख दिया। तू हमेशा ट्यूशन व कोचिंग में पैसा खर्च करता रहा। मुझे तो हमेशा ठाकुर साहब के यहाँ से ही चाय व सब्जी मिल जाती थी। मैं जीवन भर खिचड़ी ही खाया। तू कभी–कभी 'मोटरखाना' पर 'सुनीता' के साथ पैसे लेने के लिए आता। मैं तो ठाकुर साहब की टूटी–फूटी बुढ़िया साइकिल में पुराने टायर–ट्यूब लगाकर काम चलाता और तुझे मोटर–साइकिल पर 'सुनीता' को घुमाते देखता तो आनन्द से झूम उठता।

याद होगा 'सुनीता' के बारे में एक बार मैंने पूछा था तो तूने बताया कि, वह तेरे कोचिंग वाले मास्टर की बेटी है। वह भी विश्वविद्यालय में पढ़ती है। मैंने उसकी जाति पूछी तो तुम हंसकर कहे, 'बाबू मैं ऐसे–वैसे को अपने साथ नहीं रखता। मास्टर साहब बीस विस्वा के बनारस जिले के हैं।' ठाकुर साहब से मैंने इस संबंध में बात की तो उन्होंने सरयूपारीण ब्राह्मणों के बारे में विस्तार से समझाया।

मैं तुम्हारी शादी तुम्हारे ननिहाल की पट्टी पारी की एक गरीब विधवा, जो तुम्हारी मां की सहेली है की अति सुन्दर लड़की से करना चाहता था। मैंने उसकी मां को वचन भी दे रखा था। रूप–रंग, चाल–चलन और गृहस्थों के कामों में तुम्हारी 'सुनीता' उसके पैरों की धोवन भी नहीं है। तुम सबसे छिपाकर मैंने सहायता करके उसे बारहवीं तक पड़ने में सहायता भी की है। सोचा शादी के बाद अगर तुम चाहोगे तो वह आगे भी पढ़ लेगी। उससे शादी करके समाज में एक मिसाल बनती। एक गरीब परिवार का भी उद्धार होता।

मैं अपने कलेजे पर पत्थर रखकर तुम्हारी खुशी के लिए 'सुनीता' और तुम्हारे संबंधों पर कोई टीका–टिप्पणी नहीं की। मैं समझता हूँ कि तुम मेरी कमजोरी को जानते थे, अतः मुझसे बिना पूछे कोई भी कदम उठा सकते थे। मेरे तो तुम आराध्य थे, तेरा विरोध भी मैं कैसे करता ?

मसूरी ट्रेनिंग में तुझे जाना था। कई सेट कपड़े चाहिए थे। मेरे पास पैसे नहीं थे। गांव का खेत बंधक रखकर तुझे पैसे दिये और तुमने कपड़े बनवाये। पता चला कि, उसी में से 'सुनीता' को भी फैन्सी सूट तुम्हारी तरफ से भेंट किये गये। रिटायरमेंट के फण्ड आदि मिलने में देर हुई। जब मिला तो उससे मकान के लिए बैंक से लिया गया कर्ज दिया व घर की बंधक जमीन को छुड़ाया। तुम्हारे बंगले के लिए, ठाकुर साहब के बंगले में लगे फर्नीचर से अच्छे फर्नीचर खरीदे। 'अमन बाबू'जब सोवियत रूस से आये तो मुझसे कहे, 'माली काका' मैंने आपका बंगला देखा है। वह तो हमारे बंगले से बहुत अच्छा है। मुझे उसे देखकर बड़ी खुशी हुई। ' यादवेन्द्र' भईया के रूतबे के अनुसार ही उसे आपने बनवाया है।

'अमनबाबू' की बातों से मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे 'विलायत' का राज्य मिल गया हो और सारे बड़े लोग (ठाकुर साहब सहित) मेरे अधीन हो गये हैं। क्षणिक आवेश में मैं अपना अस्तित्व ही भूल गया। 'अमन बाबू' ने 'काका–काका' कहकर मेरा हाथ पकड़कर हिलाया तो मैं होश में आया।

जब तुम मसूरी ट्रेनिंग में गये। तेरे लिए मैं तड़पता रहता। दून एक्सप्रेस को देखने चारबाग जाता। जिस डिब्बे में तुम चढ़े थे उसे ढूँढता। रातभर सोता नहीं। मोटरखाने में ही घूमता रहता। एकबार तुम्हारी कोचिंग में गया, 'सुनीता' से मिला पर उसने मुझे पहचाना ही नहीं।

तुम्हारे बारे में पूछा तो कुछ बोली ही नहीं। मैं तो तुम्हारे नशे में था, इतने पर भी मैंने सोचा शायद पहचाना ही नहीं होगा।

जैसा तुम पत्र मैं कहते, हर महीने जुटाकर पैसे भेंजता रहता। यह भी पता चला कि तुम ट्रेनिंग के दौरान कोचिंग पर आये थें। यह भी बताया गया कि, कोचिंग में तुम्हारा भव्य स्वागत किया गया था। जरा मेरी सोच को देखो, मैं तो तुझे हमेशा व्यस्त रहने वाला अधिकारी ही समझता था। मैंने अपने मन को मना लिया। तुम आफिस के काम से लखनऊ आये होगे। अधिकारियों को अनेक काम होते हैं। मोटरखाने पर आकर मुझसे मिलने का तुम्हारे पास समय नहीं रहा होगा। तुम्हारे ट्रेनिंग में जाने के बाद से मैं बंगले की रंगाई–पुताई में लगा रहा। तुम्हारी ट्रेनिंग की समाप्ति के पहले मैं बंगले को तैयार कर देना चाहता था। लोगों से पूछता, मसूरी की ट्रेनिंग कब तक चलेगी? बहुत से लोग तो यह सुनकर ही घबड़ा जाते कि, मेरा लड़का मसूरी में आई0ए0एस0 की ट्रेनिंग ले रहा है। कभी–कभी तो जानबूझ कर अनजान बन जाता। लोग कुरेदते तो खुलता। मेरे अन्तस में गुदगुदी होती।

एक दिन अचानक 'अमन बाबू' 'सुबह–सुबह' अख़बार लेकर 'मोटरखाने' में आये। मैं तुम्हारे बंगले पर जाने के लिए साइकिल निकाल रहा था। उन्होनें साइकिल को मुझसे छीनकर स्टैण्ड पर खड़ी कर दी। मेरी आंखों को अपने एक हाथ से ढक लिया। बड़े ही प्यार से बोले, 'काका' पहले मुझे मिठाई खिलाने को कहो तो आपको आप की 'बहू' दिखाऊँ। मेरी समझ में कुछ नहीं आया। तुम तो मसूरी ट्रेनिंग में गये थे। न कहीं ब्याह और न बारात, तो 'बहू' कहाँ से आ गई ? मन में आया क्या 'अतीत कथा' की तरह से मसूरी में कोई धनुष तोड़कर ब्याह तो नहीं रचा लिया। मैंने सोचा लड़का है हंसी कर रहा है। मिठाई खिलाने की हामी भरी तो उसने आंख पर से हाथ हटाया तो देखा बंगले के सामने खड़े ठाकुर साहब का चेहरा उतरा हुआ था। वे रुंआसे से हो रहे थे। मैं उस समय समझ नहीं सका कि, उन्हें ऐसा क्यों हो रहा है।

'अमनबाबू' ने अखबार की हेडिंग दिखाई, जिसमें लिखा था, " एक आई0ए0एस0 ने रचाई शादी नीचे तुम्हारा व 'सुनीता' का शादी के जोड़े में फोटो छपा था। मैं हतप्रभ रह गया। ठाकुर साहब की भावना को ताड़ गया, पर फिर भी 'अमनबाबू' को सौ रुपये की नोट

देकर खड़े ठाकुर साहब का पैरा छुआ। वे दूसरी ओर मुँह करके अपने गमछे से आंख के आँसू पोछ रहे थे। इंजीनियर साहब बाहर गये थे।

'अमनबाबू' की मां ड्राइंग रूम से मुझे देखते ही रोने लगीं। अपने लोगों को इस तरह दुःखी होने का कारण मेरी समझ में नहीं आ रहा था 'अमनबाबू' भी हतप्रभ खड़े थे। उन्हें लगा कि, मेरे साथ हंसी करके उन्होंने गलती की है।

मैं तो तुझे खुश देखना चाहता था। यदि तू खुश हैं तो मेरे दुःख का कोई कारण ही नहीं हो सकता। तुम्हारी खुशी में ही मेरी खुशी थी मैं सोच रहा था, मेरा लड़का देश के लाखों में एक हैं तो, क्या उससे भी कोई गलत काम हो सकता है? अब तो वह 'राजा' बन गया है। मुझे याद आया कि ठाकुर साहब ने एक बार अंग्रेजी में कोई कहावत कही थी। मैंने उसका अर्थ पूछा तो, उन्होंने बताया कि इसका अर्थ यह है कि, "राजा कभी गलत काम नहीं करता।" मैं ठाकुर साहब से पूछता चाहता था कि, क्या वे मेरे बेटे 'यादवेन्द्र' आई0ए0एस0 को राजा नहीं मानते? संकोच में पूछ नहीं सका।

मैं तो उस समय आकाश में उड़ रहा था। ठाकुर साहब व मालकिन की भावनाओं को समझ नहीं सका। अब जब मेरे पर तूने काटे हैं और आकाश से चित्त होकर गिरा हूँ। हड्डी–पसली चकनाचूर हो गई है तो पता चला है कि, 'भावना' क्या होती है।

तुम्हारी शादी का रिसेप्शन हुआ, हम लोगों को किसी भी अवसर पर पूछा तक नहीं गया। दूसरे दिन बंगले पर कुछ फर्नीचर, फ्रीज व मिठाई के डिब्बे एक गाड़ी से ड्राइवर लेकर आया। उसने मुझसे बंगले में रखने को कहा। मैंने सब रखवा दिया। मेरे बुलवाने पर तुम थोड़ी देर के लिये आये।

दो दिन बाद पूर्णिमा थी। मैंने उस शुभ दिन को तुम्हारे कल्याण के लिए सत्यनारायण भगवान की कथा अपने गांव के देवी–देवता के थान पर सुनने के लिए तुमसे कहा, तो तुमने साफ मना करते हुए कह दिया कि, "तीन दिन तक गांव में रहना सम्भव नहीं है।" आदेश के लहजे में तुम बोले कि, "मैं सब औपचारिकता पूर्ण कर लूँ।" 'कुछ देर के लिए तुम आ जाओंगे।' मैंने गांव के भाई–बिरादर को इस शुभ अवसर पर भोजन कराने को कहा, तो तुमने साफ मनाकर दिया कि, ये सब बेकार के खर्चे हैं।

तुम्हारे पद की खुमारी मेरे ऊपर इस तरह हावी हो गयी थी कि न चाहते हुए भी मैं तुम्हारी बात को शिरोधार्य कर घर चला गया। आनन–फानन में सब व्यवस्था किया। तुम्हारी शादी के बारे में तो अखबार के और तुम्हारे दोस्त भरत के माध्यम से सबको पहले से ही पता था।

मेरे गांव जाने पर लोग कानाफूसी कर रहे थे, पर किसी की हिम्मत कुछ भी कहने की हिम्मत नही हुई।

तुम्हारी बुआ ने गांव की हलचल को बताना चाहा पर मैंने अनसुना कर दिया। गांव में पहली बार शादी के बाद के संस्कार इस तरह सम्पन्न किये गये। पता नहीं कितनी बार मैं मरा–जिया। तुम्हारे कारण अपमान का घूंट पीता रहा। लोगों की कुटिल मुस्कान मेरे सीने में गोली की तरह अभी बिस्सा रही है। उस कष्ट को मैंने कैसे–कैसे झेला है, मैं ही जानता हूँ।

शाम को जब लोग भोजन कर रहे थे उसी समय तुम एक सत्तासीन नेता की तरह गाड़ी से उतरे। गांव के लोग तुम्हारे स्वागत में हहाकर दौड़े पर तुम्हारे हाव–भाव देखकर उनके उत्साह पर बर्फीला पानी पड़ गया।

तुमसे छोटी आयु वालों ने तुम्हारा चरण–स्पर्श किया जिन्हे तुम्हें आशीर्वाद भी नहीं दिया। जानते हो ऐसा करने से पाप लगता है जिसके प्रायश्चित की कहीं भी व्यवस्था नहीं है। 'मनीराम' भईया (प्रधान) ने तुम्हारे जाने के बाद मुझसे उलहाना दिये। उन्हे इसका कष्ट था कि," तुमने अपने बुजुर्गो का निरादर किया है।" कहे– होंगे कहीं के अधिकारी । क्या कोई अपनों को ऐसे भूलता है? जिसने तुम्हें नंगे देखा है, अपनी गोद में उठाया है, उसको तुम उसके बदले में क्या दे सकते हो?" उन्होंने यह भी कहा,"रामसेवक 'जोखू' को बहुत अंहकार हो गया है। जानते हो भगवान का भोजन 'अहंकार' ही है। भगवान न करे कभी तुम्हारे जोखू पर उसका कहर टूटे ।" 'मनीराम' भईया के दिल से निकली आह को सुनकर मेरा दिल दहल गया।

तुमने भगवान के चरणामृत को हाथ भी नहीं लगाया। पंजीरी से एक मेवा का टुकड़ा उठाकर मुँह में रख लिया। तुम्हारी 'मेम साहिबा' तो गाड़ी से उतरी भी नही गांव के बच्चे भी उनको घेरे थे पर उन्होंने गाड़ी में शीशे के पीछे लगे पर्दे को गिरा लिया। वे गांव की 'नई बहुरिया' को देख भी नहीं सके। गांव की औरते मुँह दिखाने के लिए लाई गई अपनी भेंट

लेकर लौट गईं। तुम्हारी 'बुआ' 'बहू' के परछन की सामग्री रखकर प्रतीक्षा ही करती रह गई। बहू चौकठ के अन्दर आई ही नहीं।

मैं तुझे समझाने की स्थिति में नहीं हूँ। मैं हीन भावना से ग्रस्त हूँ। अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धा से हमें दैवी शक्ति मिलती है। वही हमें अज्ञात संकटों से मुक्ति दिलाते है।

तुमने ये सभी अवसर खो दिये हैं। इसको मैं अपना ही दुर्भाग्य मानता हूँ। इसका बीज तो मैंने ही बोया है। जैसा बोया है वैसा ही तो काटूँगा।

तुम्हारी 'बुआ' तुम्हारे सामने आई तो मैं देख रहा था कि तुमने उसकी तरफ देखा भी नहीं । उसकी हिम्मत ही नहीं पड़ी कि, वह तुमसे कुछ बात करे।

अपना सा मुँह लिए लौट गई। मैं जहर का घूँट पीकर रह गया। फिर भी मैं अपने को क्या कहूँ ? मेरे पापी मन ने कहा, मेरा आई0ए0एस0 बेटा शायद अपनी बुआ को पहचाना ही नहीं। मेरे भावुक मन ने तुझे हमेशा ही भोला–भाला समझा जबकि तुम मेरी स्वार्थी, कुटिल बुद्धि से पैदा हुआ हृदयहीन, दो मुंहा आस्तीन का जहरीला सांप था।

थोड़ी देर रुकने के बाद तुमने मुझसे बंगले और मोटरखाने की चाभी, मांगी और बिना कुछ खाये–पीये गाड़ी में बैठ गये। भरत तुमसे मिलने गया। उसको कह दिया कि, दूसरे दिन कोचिंग पर आकर तुमसे आकर मिले पत्नी के साथ तुम लखनऊ को प्रस्थान कर गये।

तेरे इस व्यवहार से मेरी आंखें कुछ–कुछ खुलीं। अब मैं समझ गया कि, मैं गांव का मजदूर वर्ग का अति गिरा आदमी हूँ। चपरासी का पद भी ठाकुर साहब की कृपा से पाया है। किसी का 'बाप' होने में क्या होता है? मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि, एक निचले स्तर का 'बाप' का गुजारा 'उच्च स्तरीय' 'पुत्र' के साथ नहीं हो सकता। दोनों में छत्तीस का आंकड़ा है। बाप को बेटे के लिए कभी बुराई का सपना नहीं देखना चाहिए। यदि ऐसा सोचेगा तो बेइज्जत होगा।

लखनऊ के लिए मैं यह सोच कर चला था कि, बहू को मुंह दिखाई देकर, ठाकुर साहब और मालकिन का पांच छूकर हमेशा के लिए अपने गांव में आ जाऊगाँ। लखनऊ भूलकर भी नहीं जाऊँगा अन्तिम समय के लिए अपने गांव के लोग और 'गंगा भईया' तो हैं ही।

मैं लखनऊ पहले बंगले पर आया। देखा सब बन्द पड़ा है। तुम घर से जाते समय भरत को दूसरे दिन मिलने को कहकर लखनऊ आये थे। मैं उसी को ध्यान में रखकर भरत के क्वार्टर पर गया। भरत मुझे देखते ही रोने लगा। मैंने समझा कोई अनहोनी हो गयी क्या? उसने सब बताया। मुझे मोटरखाना की चाभी दी। मैं वहाँ रुक नही सका। बंगले पर आया। वहाँ मेरा ही खरीदा , ताला बंगले के दरवाजे पर लटक रहा था। मैं ताले को देखता रहा। मुझे लगा उसमें से आग की ज्वाला निकल रही है।

मैं वहाँ से मोटरखाने पर गया। ताला खोला देखा, मेरी गृहस्थी का सामान रखा है। भरत ने बताया था कि, तूने उसमें आटा,चावल,दाल भी रखवाया है। गैस का एक छोटा सिलेण्डर ओर एक बर्नर वाला चूल्हा भी उसी से खरीदवाया था।

मेरे प्रति तुम्हारी जो अगाध श्रद्धा व अनुराग थी, उसका सजीव उदाहरण मुझे मिल गया। रही–सही आस्था धूल–धूसरित होकर छिन्न–भिन्न हो गयी। मेरी समझ में अब आया कि, मोटरखाना और बंगला अगल–बगल, साथ–साथ एक ही तरह के पदार्थ से तथा एक ही मिस्त्री द्वारा बनाये जाते हैं पर दोनों की अपनी–अपनी कल्चर होती है। 'बाप' यदि 'मोटरखाना' का है तो 'बंगले' वाला बेटा उसे 'बाप' वाले आसन पर नहीं बिठा सकता। बाप को अगर अपनी इज्जत बचाये रखना है तो उसे अपने 'मोटरखाने' में ही दुबके रहना होगा क्योंकि, 'मोटरखाना' उसकी रग–रग में समाया हुआ है। यही उसकी संस्कृति है। उसने अपने भ्रष्ट आचरण से 'बंगला' रुपी सभ्यता अपने बेटे के लिए निर्मित की है जिसे वह अपना नहीं कह सकता? उसे अपना कहना भी नहीं चाहिए। जमाने ने उस पर रोक लगा रखी है। यदि वह, उसके विपरीत सोचने का भी साहस करेगा तो 'सभ्यता' उसे ऐसा पटकेगी कि, उसका 'कचूमर' निकल जायेगा। मेरे साथ भी यही हुआ है। इसे मैं अपनी 'बेवकूफी' समझूं या 'दुर्भाग्य', पूर्वजन्म की कमाई या आज की सभ्यता की देन।

तुम तो एक महीने के हनीमून पर चले गये। एक अधिकारी के रूप में मेरे स्तर के अनुसार मुझे " मोटरखाना यानि गैरेज" एलाट कर गये। तुम्हारे इस कृत्य ने मेरे जमीर को ललकारा। बंगले की शान मेरे अन्तर से 'तिरोहित' हो गई। अब ठाकुर साहब का 'बंगला' मेरी जेहन से पता नहीं कहाँ गायब हो गया है। कोई भी बंगला अब मुझे नहीं दीखता। वही 'मोटरखाना' ही रहा गया, अतः उसे अपने लिए रख लिया।

शायद इतनी ही मेरी नौकरी की सही कमाई रही। अपनी सही कमाई ही अपनों के लिए छोड़नी चाहिए। अगर कभी तुझे या तेरे बच्चों को इसकी आवश्यकता होगी तो उनके काम आयेगी।घर की सम्पत्ति का भी मैं एक रखवाला ही हूँ। वह उसी रूप में मेरी जिन्दगी भर रहेगी। जैसे मेरे पूर्वजों ने मुझे सौंपी है वैसी ही छोड़कर जाऊँगा। हो सकता है उससे, कभी अपनी संतति का उससे कुछ भला हो सके, उनके काम आ सके।बंगले का सारा पैसा निराश्रित वृद्धों की सेवा के लिए एक स्वैच्छिक संस्था को दान कर दिया है। मेरी पेंशन मेरे लिए काफी है। रामसेवक की भावना एक पत्र में समाती गयी।

तुम्हारा सारा सामान मोटरखाना में सुरक्षित रखा है। जबतक चाहों उसमें रखो। तुम्हारी ससुराल के सामान के अलावा जिस भी किसी की जरुरत समझो ले जा सकते हो। मुझे न तो उसके प्रति मोह है और न दुराव। मोटरखाना की चाभी ठाकुर साहब के यहाँ से ले लेना।

तुम्हारा

"मोटरखाना"'बाबू'

रामसेवक पत्र को पूरा करके उसे लिफाफे में डाला और मोटरखाना से बाहर निकला, देखा मजदूर नहा–धोकर आ गये हैं। उसने, उनका सारा सामान 'मोटरखाने' से बाहर निकाला। मजदूर रामसेवक का पैर छूने लगे तो उसने मना किया पर उन्होंने अपना अधिकार समझकर कृतज्ञता का भाव अर्पित किया। रामसेवक गदगद हो गया।

उन्होंने डिब्बों को सिर पर रखा और अपने घर के लिए प्रस्थान कर गये।

रामसेवक ने जिसे बंगला बेंचा था वह 'आवास विकास परिषद' का ठेकेदार होने के कारण पहले के परिचित था। उनका मकान करीब में ही था। राम सेवक उसके घर गया। उसे लेकर बंगले पर आया। टूटा कुँडा व ताला दिखलाया। उससे कड़ा, कुँडा ताला का यह सौ रूपये रख लें। यह कहकर रूपये उनकी जेब में डाल दिया। उसको अन्दर से पूरा मकान दिखला दिया। पूरा साफ–सुथरा। वह उसे देखकर प्रसन्न हो गया। उसे ऐसी आशा नहीं थी।

वह तो बंगले को बाहर से ही देखे था। रामसेवक के बंगले के कागजात भरत के यहाँ ही रखा रहता था अतः उसे बेंचने में कोई परेशानी नही हुई। वह दो दिन तक चाभी रहते हुए भी मोटरखाना नहीं खोला। शाम को मोटरखाना पर आ जाता और रातभर उसी के सामने बैठा रहता। अपने कष्ट से ठाकुर साहब को दुःखी नहीं करना चाहता था अतः वहाँ नहीं गया। वहां के मोटरखाने में एक माली को रामसेवक ने रख दिया था, वहीं लॉन आदि का काम देखता।

रामसेवक ने ठेकेदार साहब को बता दिया कि, उनका बेटा जब आवे तो उससे ठाकुर साहब के यहाँ 'मोटरखाने' की चाभी लेने के लिए भेज देंगे।

रामसेवक ने 'मोटरखाने' को बन्द किया। सड़क पर आया तो ठाकुर साहब के बंगले की ओर जाने के लिए उसके पैर ही नहीं उठ रहे थे। वह सोच रहा था कि उनसे वह क्या कहेगा? झूठ कैसे बोल सकेगा? घर पर कैसे क्या हुआ? क्या बतायेगा?

कहीं बंगले को बेचने की खबर उन्हें न हो गई हो? सब किया कराया तो उन्हीं का था, बिना उनसे अनुमति लिए मुझे उसे बेचने का क्या अधिकार था? ऐसी भी जल्दी क्या थी? हो सकता है वे कहें, जब बेचना ही था तो पैसे मैं भी दे सकता था। ' अमन बाबू ' भी तो अपने ही थे। उन्हीं को बंगला दे दिया होता। पर वे ऐसे नहीं हैं। मेरा बंगला 'जोखू' के रहते नहीं लेते। कौन सा मुँह लेकर उनके यहाँ जाऊँ?

उधेड़बुन में वह धीरे–धीरे बंगले के करीब पहुँच गया। चार दीवारी की आड़ में खड़ा हुआ। गेट की तरफ बढ़ने की हिम्मत ही नहीं हुई। वह पीछे घूम कर फिर सोचा क्यों न चाभी व पत्र भरत को दे दूँ? वही ठाकुर साहब के यहाँ दे देगा। फिर सोचा नहीं, इससे तो बेचने का राज खुल जायेगा। गाँव वाले मुझे थूँकेंगे। पर क्या हुआ आज नहीं तो कल जानेगें ही? वह थोड़ा आगे बढ़ा तो क्या देखता कि, उसका रखाया गया माली कोई सामान लिये आ रहा है। उसे मुँह मांगी मुराद मिल गयी। वह जैसे ही समीप आया राम सेवक को देखते ही बोला, दादा जी "राम–राम"।

राम सेवक चौका, सोचा कहीं पीछे से ठाकुर साहब न सुन रहे हों। पीछे देखा तो गेट बन्द था और वहाँ कोई था भी नहीं।

माली के समीप जाकर धीरे से बोला, राम–राम भाई। देखो एक काम तुझे सौंपता हूँ, थैले में से लिफाफा व चाभी निकालकर उसे पकड़ाया। उससे कहा, कि यह मेरे लड़के को ही देना। वह एक महीने बाद आवेगा और किसी को इसके बारे में कुछ न बताना। ठाकुर साहब व मालकिन को मेरे आने के बारे में भी कुछ न कहना! मैं कुछ जल्दी में हूँ फिर आकर सबसे मिलूँगा।

यह कहकर बिना उसका जवाब लिए तेजी से बस स्टैण्ड की ओर चल दिया।

****

लेखक– डॉ0करुणा शंकर दुबे
एमआईजी–1/148,रुचिखण्ड़–दो,
शारदानगर,रायबरेलीरोड़
लखनऊ–226002